रविवार, दिनाँक **06-10-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

हम घर साजन आए हमारे, हमरा भाग्य जगाने को।
जीवन का इक मकसद देकर, परउपकार कराने को।।
हम घर साजन आए हमारे।

परउपकार करो तुम मन से, पूरी लगन में आ कर के।
परउपकार करो तुम तन से, अनथक परिश्रम दिखा कर के।
हम घर साजन आए हमारे।

परउपकार है उत्तम भक्ति, परउपकार ही आत्मिक शक्ति।
परउपकार से समझ सकोगें, अपना बल और अपनी हस्ती।
हम घर साजन आए हमारे।

परउपकारी नाम नहीं चाहता, परउपकारी मान नहीं चाहता।
वह तो अकर्त्ता भाव में रहकर, बनता है सब का सुखदाता।
हम घर साजन आए हमारे।

परउपकार सजन-भाव का सूचक, परउपकार भगवान का द्योतक।
इसीलिए कहते हैं सब से, परउपकार अपनाओ तुम।

हम घर साजन आए हमारे।

साजन आए बजी बधाई, देख देख मैं उन्हें हर्षाई।

कैसी है ओ सूरत इलाही, सजनों मेरे मन को भाई।

हम घर साजन आए हमारे।

सजनों अगर अभी आपने परोपकार में ढलने के लाभ को ध्यानपूर्वक सुना है तो हम मानते हैं कि आपके अन्दर भी परोपकारी बनने की भावना अवश्य उत्पन्न हुई होगी। अगर आपका उत्तर 'हाँ' में है तो समझो कि आप निष्काम भाव से सेवा करते हुए अपना उद्धार करने में सक्षम हो सकते हो। इस संदर्भ में सजनों अभी तो हाल यह है कि हम में अधिकता सजन जिस भी कार्यक्षेत्र में सेवारत हैं, वे सेवा के यथार्थ भाव अनुसार अपना कार्य सम्पन्न नहीं करते। उनको कहीं न कहीं 'मैं-भाव' छू जाता है तथा वे एक-दूसरे से मुकाबला करने की भावना से ग्रस्त नजर आते हैं। इस विषय में सजनों हमें समझना चाहिये कि हमें जहाँ की भी सेवा मिली है, वह हमने पूरी निष्ठा से धर्म-संगत सम्पन्न करनी है। अगर हम ऐसा नहीं करते यानि अपने कर्त्तव्य की सीमा से भली-भान्ति परिचित होकर उसे स्पष्टतया नहीं समझते तो हम परिस्थिति विशेष को समरूप रखने के स्थान पर कही न कही संस्था की हानि कर बैठेंगे जो हमारी लापरवाही के कारण दिखायी नहीं देगी। सजनों जानो कि ऐसी लापरवाही का अन्ततः परिणाम अच्छा नहीं निकलता और वह भोग देर-सवेर भोगना ही पड़ता है। इसलिये हर सेवादार के लिये द्वारे की नीति अनुसार प्राप्त सेवा को निष्काम भाव से करना अनिवार्य है। उसके लिये आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्तकर आत्मोद्धार हेतु सेवा करनी है। जानो यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमारे भाव-स्वभाव नकारात्मक बन जाएंगे जिनसे बहुत बड़ा नुक्सान होगा क्योंकि तब हमारी वृत्तियाँ नकारात्मक हो जाएगी और हम बौद्धिक रूप से कमजोर हो जाएगे। आगे चलकर यही कमजोरी जीवन की दुर्बलता बन हमें हताश-परेशान करती रहेगी और उस परेशानी की वजह से हम नाम-अक्षर ठीक से नहीं चला पाएंगे। ऐसी स्थिति के दुष्परिणाम स्वरूप फिर हम जन्म की बाज़ी हार जन्म-मरण के चक्रव्यूह में उलझ जाएंगे। अतः हर सजन के लिए सेवाभाव की गहराई को समझना आवश्यक है। यहाँ याद रखो जो समझदारी से सेवारत रहता है, वही सजनता का प्रतीक

बन पाता है। अतः अपने प्रति व कुल संसार के प्रति सजनता दिखाओ। निःसन्देह मार्ग में कठिनाईयाँ आयेंगी पर उनको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित विचारों को दृष्टिगत रखते हुए व उन्हीं के अनुसार आचार-व्यवहार अपनाते हुए हँसते-हँसते लाँघ जाओ और सेवा में निरन्तर आगे बढ़ते जाओ। तभी आप परोपकारी नाम कहाओगे। अब यह तो आप जानते ही हो कि परउपकारी कौन है? -परउपकारी परमात्मा है।

अन्य शब्दों में यह परमात्मा स्वरूप होकर जगत में जगत से निर्लेप होकर विचरने जैसी सर्वोत्तम बात है। इस सर्वोत्तमता के सभी सजन प्रतीक बनो, हमारा आप सबसे यही अनुरोध है। हम मानते हैं कि आप हमारे इस अनुरोध को स्वीकार कर अपने हितों का ध्यान रखते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढल सजन भाव अपना लोगे। आप सभी ऐसा करने में समर्थ हों, इसी भावना के साथ अब आगे बढ़ते हैंः-

सड़दी दुनियां देख के, हुण आ गये ने बलधार।

प्यारी दासी महाबीर जी नू, दिन रात करे नमस्कार।।

मोंढे हीरे जड़ी गदा सुहांवदी, गल फुलां दे हार।

प्यारी दासी महाबीर जी नू, दिन रात करे नमस्कार।।

रत्न सिंहासन रघुनाथ जी बैठे, चंवर झुलन बेशुमार।

अचरज उन्हां दी लीला ए, अचरज उन्हां दा प्यार।।

उपमा कोई न कर सके, ऋषि मुनि गये हार।

गुप्त रूप बली आंवदे, वैराग ने पाया दिदार।।

तेरी मेरी दुई नू भैणां छोड़ के, आवो महाबीर जी दे द्वार।

ओ तीनों ताप मिटा देसन, भैणां हो जासो निहाल।।

भैणां नू आत्मपद दी चाह है, बली आप मिलावन हार।

त्रिलोकी को रघुनाथ मिलाये दियो, हिवे मेरे भक्त हितकार।।

इक दासी दिन रात रोंवदी, ओदा भय मिटाया बलधार।

ओन्हूं प्रेम है रघुनाथ जी दे मिलने दा, महाबीर जी दित्ता ए दिदार।।

ओ सब दे कष्ट मिटांवदे, दासी चरणां तों जावे बलिहार।

सारियां दासियां हथ जोड़ के, महाबीर जी अग्गू करो नमस्कार।।

इस भजन के भावाशय को समझते हुए इस सत्य को स्वीकारो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कलुकाल को विध्वंस करने हेतु दुनियाँ में आ गये हैं। अतः सच्चेपातशाह जी ने इस भजन द्वारा जो आवाहन दिया है उसे दृष्टिगत रखते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे शीश अर्पण कर दो यानि झुक जाओ और हर प्रकार से अपने ख़्याल को समेटकर उनकी शास्त्र-विहित आज्ञाओं का पालन करना आरम्भ कर दो। सजनों इसी क्रिया में ही जीवन की सुख-शान्ति समझो। इस शांति की प्राप्ति हेतु शास्त्र विहित प्रत्येक विचार को धारण कर उन्हें मन-वचन-कर्म द्वारा व्यवहार मे यथा उतार लो। ऐसा होने पर आपके मन से तेरी-मेरी का भाव समाप्त हो जायेगा और सजन भाव स्थापित हो जायेगा। अब सजन भाव स्थापित होते ही आपका मन सब संकल्प-विकल्प रूपी झंझटों से स्वतन्त्र हो जायेगा। जानो यह आज़ादी आपको वास्तविक रूप से निर्विकारिता पूर्वक जीवन जीने के योग्य बना देगी। परिणामतः आप अपने जीवन का वास्तविक लक्ष्य मोक्ष प्राप्तकर जीवन आबाद कर लोगे। अतः अपने सजन बनो और ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में कमजोर मत पड़ो। ए विध् अन्यों को भी ऐसा पुरुषार्थ करने के प्रति उत्साहित कर परोपकार कमाते हुए परोपकारी नाम कहाओ। फिर कह रहे है परोपकारी - ईश्वर है। सजनों इसी तरह अपने यथार्थ स्वरूप को जान पाओगे और अपने व अपने संगी-साथियों पर भी कृपा कर पाओगे। ढीठ बनकर दुनियाँ में मत विचरते रहो बल्कि ऊपर उठो ताकि जब भी आप नाम-अक्षर चलाओ तो मनुराज से ऊपर उठ अपने ख़्याल को उसके यथार्थ स्थान पर स्थित करने में सक्षम हो जाओ। ए विध् आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के अधिकारी बन आत्मज्ञान प्राप्त कर आत्मीयता के प्रतीक बन जाओ। यही जीवन का सार है। अतः समझदार बनो, समझदार बनो और समझदार बनते हुए आगे कीर्तन सुनोः-

(श्री महाबीर जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

चलो तो सही साजन जी चलो तो सही।

श्री रामचन्द्र बुलैंदे ने तुसां ताईं।।

चलो तो सही हुण चलो तो सही।

क्या तरीका समझांदे ने ओ तुसां ताईं।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

बैठ जाओ मेरे साजना शक्ति ते लक्ष्मी संग जी।

तरीका असां देवना हो जाओ प्रसन्न जी।।

प्रसन्न होसी मेरा साजना प्रसन्न होसी हनुमान जी।

शक्ति लक्ष्मी प्रसन्न होसी, प्रसन्न होसिया कुल जहान जी।।

चार वेद, छः शास्त्र गुरु इस बाग दा मालक ईश्वर जान।

इन्हां विचों शब्द पकड़ लवो सजनों अपना आप लवो पहचान।।

कलुकाल विच गुरु बन बैठे, सजनों गुरु बन बैठे ने ओ निकम्मे।

बाग बिगड़या ओ संवरे मुश्किल मुड़ मुड़ मरे ते मुड़ मुड़ जम्मे।।

बनावटी गुरु बनावटी चेला, बनावटी नगरी नूं ओ मानो।

बनावटी तुसां नूं पाया पहरेवा, तुसां ईश्वर नूं किवें पहचानो।।

फिर गुरु आप चेला ही आप मिट गया फुरना हटे सन्ताप।

मुक गई सकल सामग्री इन्सानों जगत तों हो गयों आज़ाद।।

हनुमान जी बिगड़े दरख़्त उखाड़नगे, हरे दरख़्तां दा करन बचाऊ।

कुकर्मियां अधर्मियां लई हिन ख़तरनाक, सच्चाई धर्म दा करन वर्ताव।।

साजन जी बेफिकरे हो जाओ, निपट लऊंगा निपटूंगा मैं।

निपट के दिखावां, तुसां डेधे रहना, ऐसी करामात चलावांगा मैं।।

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का हर शब्द आप तक व जन-जन तक युक्तिसंगत पहुँचाने का अनथक प्रयास हो रहा है। इस कीर्तन से हमें समझ जाना चाहिये कि शारीरिक गुणों को धारण करने के प्रति हमें मन क्यों उकसाता है? इस सन्दर्भ में जानो कि जैसे ही मन में संकल्प-विकल्पों की तरंगों का उठना आरम्भ होता है, वैसे ही हम बौद्धिक तौर पर अज्ञानमय अवस्था में जाना आरम्भ कर देते हैं। जब कोई भी इन्सान मानसिक तौर पर अज्ञानमय अवस्था में चला जाता है तो वह हताश होकर किसी न किसी का आवलम्बन खोजता है। यह सत्य का लोप होने व इन्सान की बौद्धिक पतनता का प्रतीक होता है। सतयुग में हर मानव के मन में आलौकिक सत्य होता है, अतः वह अपना गुरु आप ही होता है इसलिए वह मानव धर्म के अनुसार अपना संचालन सत्यनिष्ठा से निर्वहन करने के प्रति दृढ़-संकल्पी होता है। जैसे ही किसी कारणवश मन में संकल्प उठता है, वैसे ही नकारात्मक भाव-स्वभावों का उद्गम होता है और त्रेता युग का आगमन हो जाता है। त्रेता युग में सम्भवतः हर मानव अपने धर्म को जानने-पहचानने वाला नहीं होता जिसका सीधा सा अर्थ है कि वह अज्ञानमय अवस्था में विचरण कर रहा है और आत्मिकज्ञान से वंचित है। त्रेता युग में ही गुरु-चेले का भाव आरम्भ हो जाता है। संकल्प-विकल्पों का यह रोग बढ़ते-बढ़ते द्वापर में और अधिक बढ़ जाता है। कलियुग में तो यह हर प्रकार की सीमाओं का उल्लंघन कर जाता है और मानव पूर्णतः अज्ञानमय अवस्था में पहुँच किसी न किसी के अधीन होकर अपना जीवन व्यतीत करना उचित समझता है। सजनों जानो कि यहीं से ही कुरीतियों का व कमजोरियों का आरम्भ होता है और साथ ही यहाँ आकर दूसरों पर आश्रित होने की क्रिया आरम्भ हो जाती है। इस सन्दर्भ में इन्सान का आत्म-विश्वास समाप्त हो जाता है जिसके कारण हर पहलू से नुक्सान ही नुक्सान होता है।

सजनों जानो आज मानसिक तौर पर मानव-जाति दुर्दशा में प्रवेश कर चुकी है अतः अब समय आ गया है सम्भलने और सम्भालने का। जिस का एकमात्र मार्ग है - आध्यात्मिक

ज्ञान प्राप्त कर उसका गहराई से व्यावहारिक ढँग समझना। फिर वैसा ही आचार-व्यवहार अपनाना हर इन्सान के लिये अति आवश्यक हो जाता है। ऐसा न करने पर हम आत्मीयता अनुसार किसी विध् भी जीवन यापन करने के काबिल नहीं बन सकते और आजीवन शारीरिक व मानसिक चिन्ताओं में रोगों से ग्रस्त होकर अपना अमोलक जीवन बर्बाद कर बैठते हैं। सजनों ऐसा किसी के साथ न हो, उसी के लिये ही २ अक्टूबर को आध्यात्मिक वाक्पटुता का कार्यक्रम रखा गया जिसे आप सब ने देखा और समझा कि, आत्मिक ज्ञान से वंचित रह कर कोई भी इन्सान अपना जीवन प्रसन्नतापूर्वक एकता से व्यतीत करने में सक्षम नहीं हो सकता। इस कार्यक्रम के द्वारा विश्व-स्तर पर हर मानव को यह सन्देश पहुँचाने का यत्न किया गया कि भौतिकज्ञान से अधिक आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति को प्राथमिकता दी जाये। इस कार्यक्रम में जिन बच्चों ने बोला, उन्होंने सिद्ध कर दिया कि अगर हम चाहें तो ऐसा सकारात्मक परिवर्तन लाने में हर पहलू से सक्षम हैं। हमें इन बच्चों से प्रेरणा लेनी चाहिये कि अगर वह बच्चे कुछ समय में ही सतवस्तु के कुदरती ज्ञान से सम्बन्धित जो ज्ञान-पुस्तिकायें उन्हें भेजी गयी उनको पढ-समझकर इतने अच्छे ढँग से प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकते हैं तो हम क्योंकर नहीं हो सकते? इन बच्चों से हमें प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये और इस विश्वास को सम्मुख रखते हुए कि जो हम अब तक नहीं कर पाये, वह अब करके दिखायेंगे। अतः आज से ही भौतिकवाद को त्याग आध्यात्मिकवाद अपनाने के प्रति पूर्णतया जागृति में आने की आवश्यकता है। उसके लिये मेहनत तो करनी ही पड़ेगी। इसलिये हम पुनः अनुरोध करते हैं कि नियमित ढँग से इधर-उधर की बातें करने के स्थान पर अपनी दिनचर्या में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ को समझ-समझकर पढ़ने व उसमे विदित विचारों को धारण कर तद्नुरूप व्यावहारिक रूप देने की क्रिया का शुभारम्भ अविलम्ब कर दो।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों हर तरफ से हर किसी का ज्ञान सुनना-समझना तत्क्षण ही बन्द कर दो। आपके पास आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का केवल एकमात्र साधन हो - सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ। इसी माध्यम के आगे झुकना व नत-मस्तक होना है और आत्मिकज्ञान प्राप्तकर अपना जीवन उत्कर्ष करने में सफल हो जाना है। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप मानव चोले की वास्तविक यथार्थता को जान पाओगे और हर्षित हो उठोगे। तब आपके जीवन का हर क्षण सकारात्मकता से व्यतीत होना आरम्भ हो जायेगा। सजनों यह सबसे बड़ी खुशहाली है जो कि संसारी धन की प्राप्ति से कहीं अधिक बेहतर है। अपने अन्तर्घट,

परिवारों व समाज में खुशहाली के वातावरण का निर्माण करना चाहते हो तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के आगे नत-मस्तक हो जाओ, शीश अर्पण कर दो और जो भी धारण करो, वहीं से धारण करो। अगर जीवन में कुछ भी आपकी समझ में न आ रहा हो तो उसका समाधान व सत्यज्ञान आपको वहीं से प्राप्त हो जायेगा। फिर इधर-उधर से भटककर कुछ पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। इस प्रकार आत्मज्ञानी बन मोक्ष प्राप्त करने के योग्य बन जाओगे क्योंकि आत्मज्ञानी परोपकार प्रवृत्ति में ही अपने जीवन का हर क्षण व्यतीत करना उचित समझता है। सजनों आपको तो पता ही है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार परोपकारी ब्रह्मज्ञानी होता है। यदि आप अपने ब्रह्म-स्वरूप को जानना चाहते हो, पहचानना चाहते हो, ब्रह्ममय होकर जगत में विचरने के योग्य बनना चाहते हो, चौरासी के चक्कर से बचना चाहते हो और परमधाम पहुँच विश्राम पाना चाहते हो तो हमारा अनुरोध स्वीकार करते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित एक-एक शब्द को अर्थ सहित जीवन में उतार लो व अपने सजन बन जाओ। अगर कोई इसके विपरीत दिशा में जाने के लिये आपको प्रेरित या उत्साहित करे तो उस दिशा में कदापि कदम मत उठाना। अगर आपने वैसा कर लिया तो अपने वैरी खुद बनने की बात होगी और जानो कि स्वयं का वैरी होना तो मूर्ख होना होता है।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो और मानो कि जो अपना वैरी होता है वह कदापि आत्म-निर्भर नहीं होता। परन्तु जिसके पास ज्ञान होता है वह ही आत्म-निर्भर होता है। आत्म-निर्भर को कभी कोई कामना नहीं सताती। आत्म निर्भर निष्काम भाव से जीवन में जो भी करता है, वह धर्म-संगत ही करता है। सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा हैः-

धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर सजनो तन-मन-धन सब वारना रे

सजनों यह आज के वातावरण से ऊपर उठने की बात है क्योंकि आज के वातावरण में किसी को थोड़ा सा भी धन दो तो वह धर्म हार जाता है और फिर जो भी चाहो उससे गलत काम करवा लो। सजनों हमने इतना कमजोर इन्सान नहीं बनना क्योंकि हमारे पास 'सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ' है जो सबसे अमीर बनाता है। अतः हमें किसी से ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है अपितु आज के अज्ञानियों को इस ग्रन्थ के ज्ञान के संग

जोड़ने की आवश्यकता है। हमें किसी का भी गुरु नहीं बनना। अभी आपने कीर्तन में सुना है किः-

साजन जी बेफिकरे हो जाओ, निपट लऊंगा निपटूंगा मैं।

निपट के दिखावां, तुसां डेधे रहना, ऐसी करामात चलावांगा मैं।।

इस वाक्यांश के संदर्भ में सजनों आपको स्पष्ट कर दें कि जब एक दो निष्कामी सजन अहंकार प्रवृत्ति में ढल गये तो उन्होंने अपनी एक अलग मण्डली बना ली और खुद गुरु बन बैठे। इस पर सच्चेपातशाह जी हैरान हो गये और तभी सजन श्री हनुमान जी ने कहा कि आप बेफिकरे रहो, इनको हम खुद ही निपट लेंगे। सजनों इस सन्दर्भ में अगर हम आपको उनके अन्त के बारे में बखान करें तो आप दँग रह जाओगे। उन्होंने आत्मपद पर पहुँच कर पद-गरिमा को नहीं जाना। पद-गरिमा को न जानना अहंकार प्रवृत्ति में ढलने जैसी बात होती है। इसीलिये सजनों स्वयं पर पूर्णतया सतर्क रहना है कि मन-वचन-कर्म द्वारा मुझसे कुछ ऐसा न हो जो कि धर्म के विपरीत हो। मुझे किसी से कुछ नहीं छीनना और न ही किसी का हक़ मारना है क्योंकि सबमें भगवान हैं। अतः समदृष्टि होकर उसी एक दर्शन में स्थित रहना है। सबको अपने सम समझते हुए समता अनुरूप व्यवहार करना है ताकि मन में दुई-भाव प्रवेश ही न करे, इसी में समझदारी है। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हर सजन के लिये समझदार बनना और समझदारी से ही इस जगत में निष्पाप होकर विचरना आवश्यक है। ऐसा होने पर दाता यानि शहनशाह उस सजन पर प्रसन्न होकर उसे सब कुछ प्रदान कर देते हैं यानि मालो-माल कर देते हैं। इस तरह मन संकल्प रहित अवस्थ में सध जाता है। फिर जब कोई भी इच्छा अन्दर नहीं रही तो अन्तर्घट में सतवस्तु छा जाती है। जब अन्तर्घट में सतवस्तु छा जाती है तो तीनों लोकों में यश-कीर्ति फैलती है और हर तरफ से बधाई-बधाई आती है। तो हमें

ऐसा ही सुपुत्र बनना है। हम मानते हैं कि हमारा यह अनुरोध स्वीकार करोगे और अपने व समाज के सजन बनकर अक्षय यश-कीर्ति प्राप्त करने में सफल हो जाओगे।

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

गरुड़ घबलाटियां लावे नाले हस्से नाले गावे, श्री राम चरणों में ढावे।

हथ जोड़ करे प्रणाम हथ जोड़ करे प्रणाम, हो हो हो साजन हस पड़े।

खिड़ खिड़ हस्से हनुमान शक्ति लक्ष्मी ही हस्सन, हस्सन हो करके हैरान हस्सन हो करके हैरान।।

हो हो हो सजनों जिव्हा दा कड्डो वल हो हो हो मुश्किल हो जाये तुहाडी हल।

जेहड़ी बीत गई, जेहड़ी आने वाली, सारी तुहाडी जायेगी टल सारी तुहाडी जायेगी टल।।

हो हो हो फिर शब्द गुरु हनुमान जी दे द्वारे ते हो हो हो ओन्हां दी युक्ति है प्रबल।

फिर पकड़ो सजनों आपनूं, एहो बात ओन्हां दी एहो गल एहो बात ओन्हां दी एहो गल।।

हो हो हो हनुमान जी दे वचनां दी पालना करो।

हो हो हो ओन्हां दी बात फड़ो पकड़ो इक इक गल।

ओ दाता है शहनशाहवां दा शाह हम बालक ओन्हां दे हैं निर्बल हम बालक ओन्हां दे हैं निर्बल।।

हो हो हो फिर शब्द गुरु होर लइयो न किसे दा नाम हो हो हो सजनों बात लवो तुसां फड़।

हनुमान जी दे चरणों में उस द्वारे ते एह बात नहीं मुश्किल सजनों बात नहीं मुश्किल।

हो हो हो ओन्हां दी रौशनी तेज और ताकत नूं देखो हो हो हो ओन्हां दा बल है नगरी ते प्रबल।।

मौत कम्बे हनुमान जी दे कोलों, कम्ब रही थर थर।

वचन पालो, कोई मुश्किल नहीं सजनों।

मौत दा न राहसवे डर, सजनों मौत न राहसवे डर।।

हो हो हो गुरु ग्रन्थ गुरु बाणी गुरु शब्द हो हो हो विचार करो सजनों प्रबल।

भीम रूप धर असुर संहारे पापी जीवां दे खत्म करन लई मचावनगे हलचल ओ मचावनगे हलचल।।

शब्दः

सजनों इक बात सुनो साडी गल।

बचाओ तुहाडा हो सकदा है।।

हनुमान जी दे वाक् लवो तुसां फड़।

सजनों हनुमान जी दे वाक् लवो तुसां फड़।।

सजनों हमें समझ नहीं आता कि इस कीर्तन के एक-एक शब्द का सन्देश आपके अन्दर क्यों नहीं उतरता? जिस प्रकार का परिवर्तन अब तक हो जाना चाहिये था, उसमें क्योंकर कमजोरी दिखाई देती है। अब बताओ कि कलुकाल से छुटकारा पाकर सत्य का प्रतीक बनाने हेतु आपका गुरु कौन है?

'शब्द'।

अब बताओ कि शब्द किसकी वाणी है?

'मौन'।

सजनों जानो कि शब्द कुदरत की वाणी है, जिसने बनत बनाई है। अब बताओ कि वह वाणी जिसमें विदित है वह क्या है?

'सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ'।

ठीक है ग्रन्थ ही है। अभी आपने सुना है 'गुरु-ग्रन्थ', वही आपका गुरु आपके घरों में भी विराजमान है। किस-किस के घर में गुरु ग्रन्थ है?

'लगभग सभी ने हाथ खड़े किये'।

इस सन्दर्भ में सजनों गुरु-ग्रन्थ सभी के घरों में विराजमान होना चाहिये। उसमें जो वाणी विदित है, आप स्वयं उसे पढ़ने और समझने के काबिल बनो और उसमें जो शब्द ब्रह्म विचार हैं, अपने ख़्याल को उस शब्द के संग जोड़ दो और तद्नुसार आत्मदर्शन कर लो। याद रखो सजनों गुरु की इज्ज़त/सम्मान करना नितान्त आवश्यक होता है। अतः यह न हो कि ग्रन्थ घर में विराजमान हो पर हम उसमें विदित वाणी को प्रतिदिन पढ़-समझकर व्यवहार में उतारने में कमजोरी दर्शाएं। जानो जो भी ऐसा दर्शायेगा, उसका जीवन मौत के हवाले हो जायेगा। अब आप ही बताओ कि जो सजन मानव रूप प्राप्त होने पर भी स्वयंमेव मौत चाहता है व अपने ख़्याल/ध्यान को, जिस प्राकृतिक शक्ति से मौत भी थर थर काँपती है, उन सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के साथ जोड़कर उनके हुक्मानुसार जीवन जीने में कमजोरी दिखाता है, उससे बड़ा नादान आत्मघाती और कौन हो सकता है? सो मानव चोले के महत्त्व को समझो। मानव चोला प्राप्तकर केवल शरीरी हार-श्रृँगार धारण करने में ही अपनी शान मत समझो। याद रखो मानव चोला चौरासी लाख योनियों के उपरान्त आत्मपद की प्राप्ति करने हेतु प्राप्त होता है, अतः इसकी कद्र करो। खुद ही अपने चोले की बेइज्ज़ती मत करो। यह नादानी ही हार का कारण बन रही है। अगर जीवन विजयी होना चाहते हो तो गुरु-ग्रन्थ की चरण-शरण में आ जाओ, झुक जाओ। इसमें विदित वाणी यानि हर शब्द को पूरे सम्मान के साथ गहनता से समझते हुए जीवन में उतार लो और गुरु का संग प्राप्त कर अमर नाम कहाओ।

आप अपने मकसद में कामयाब हों इन्हीं शुभकामनाओं सहित।

नोटः-

सजनों जैसा कि अक्टूबर में कार्तिक की मीटिंग का विधान है और इस माह २० अक्टूबर को मीटिंग होनी निश्चित हुई है। अतः सब सजनों ने नीति अनुसार अपने-अपने स्कूलों में मीटिंग में अवश्य सम्मिलित होना है। यह सूचना अपनी स्मृति में रखते हुए और अन्य सजनों को मँगलवार तथा इतवार सत्संग में दे देनी है या वैसे सन्देशा भेज देना है ताकि

मीटिंग के दिन जो भी बातचीत हो, सब उसको सुन-समझ सकें और परमार्थ की ओर कदम आगे बढ़ाने में सक्षम हों।